शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2014

कथ्य की दृष्टि से डॉ.रामशंकर चंचल का प्रौढ़ साहित्य

रागिनी सिंह, सहा.प्राध्यापक
श्री जंयती लाल हीराचंद संघवी गुजराती इनोवेटिव कॉलेज
ऑफ़ कॉमर्स एंड साइंस
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

इस शोध पत्र के माध्यम से मालवाचंल के रचनाकार डॉ.रामशंकर चंचल के प्रौढ़ साहित्य में निहित कथ्य को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। इस संदर्भ में उनकी 9 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनमें उन्होंने झाबुआ अंचल के आदिवासियों के आंचलिक, सामाजिक ,सांस्कृतिक ,आर्थिक-सुधारवादी दृष्टिकोण, मनोवैज्ञानिक व महिला सशक्तिकरण आदि पक्षों को बड़ी सूक्ष्मता के साथ उभारने का यत्न किया है। किस्से कहानियों के प्रति मानव मन का रुझान आरंभ से ही रहा है इसीलिए उन्होंने अपने प्रौढ़ साहित्य में इस विधा का अधिक प्रयोग किया है । भिन्न पुरस्कारों व सम्मानों से सम्मानित रामशंकर चंचल के अनेक बाल कथा, कविता एवं आलेख संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं व उनकी रचनाएं शाला एवं विश्विद्यालय स्तर के भिन्न पाठ्यक्रमों में भी शामिल की गई हैं। इसके अलावा आकाशवाणी व दूरदर्शन से भी उनकी रचनाओं का लगातार प्रसारण होता रहा है।

प्रमुख बिन्दु: आंचलिकता , लोकसंस्कृति, सामाजिकता, आर्थिक-सुधारवादी दृष्टिकोण,मानवीय संवेदना, महिला सशक्तिकरण

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में डॉ.रामशंकर चंचल के प्रौढ़ साहित्य में निहित कथ्य का विश्लेषण किया गया है। राष्ट्रहित में निर्मित उनके प्रौढ़ साहित्य के विवेचन हेतु प्रथम एवं द्वितीय सूचना माध्यमों को आधार बनाया गया है।

भूमिका

प्रौढ़ साहित्य का अर्थ है प्रौढ़ वर्ग का साहित्य। यहाँ प्रौढ़ वर्ग से तात्पर्य उस वर्ग विशेष से है जो किन्हीं कारणों से शिक्षा से वंचित रह गया। जिसकी वजह से इस वर्ग के लोगों में उन्नति का हमेशा अभाव रहा और वे लोग जीवन भर भिन्न समस्याओं से जूझते रहे। हमारे देश का विकास निरक्षरता के कारण ही अवरुद्ध हुआ है। गांधी जी के अनुसार -"जन समूह की निरक्षरता हिंदुस्तान का कलंक तथा श्राप है ,शर्म है और वह दूर होना ही चाहिए।" इसी बात को ध्यान में रख कर आजादी के बाद की सभी पंचवर्षीय योजनाओं में प्रौढ़ शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया । जिसमें विशेष तौर से 15 -35 वर्ष के प्रौढ़ लोगों को साक्षर बनाने के उद्देश्य से वर्ष 1978 में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के तहत दस करोड़ निरक्षरों को साक्षर बनाने का लक्ष्य रखा गया। प्रौढ़ शिक्षा को गति प्रदान करने के उद्देश्य से केन्द्र व राज्यों में प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय खोले गए जिनमें अधिकतर राज्य संसाधन केन्द्र स्वैच्छिक संस्थाओं के अंतर्गत खोले गए जिन्हें केंद्रीय अनुदान दिया गया। "कुछ राज्य संसाधन

केन्द्र विश्वविद्यालय से संबद्ध कर खोले गए। " इन केन्द्रों में पठन-पाठन सामग्री का निर्माण किया जाता है। जो लक्ष्य समूह के जीवन, व्यवसाय व समस्याओं से जुड़ी हो। प्रौढ़ शिक्षा की महत्चपूर्ण धुरी है प्रौढ़ साहित्य क्योंकि प्रौढ़ शिक्षा के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए ऐसे साहित्य की आवश्यकता महसूस की गई जो प्रौढ़ो के वैयक्तिक विकास एवं समाज में उनकी सहभागिता को रेखांकित कर सके। इसी कारण साहित्यकारों से ये अपेक्षा की गई कि वे भी इस अभियान का हिस्सा बने और राष्ट्रहित के लिए प्रौढ़ साहित्य का सृजन करें। डॉ.रामशंकर चंचल मालवा अंचल के ऐसे ही रचनाकार हैं जिन्होंने प्रौढ़ साहित्य की रचना की है। जिसका उद्देश्य नवसाक्षरों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश भरना है। जिसके द्वारा उनमें सृजनात्मक चिंतन करने की समझ उत्पन्न हो और वे आत्मनिर्भर होकर अपनी सभी समस्याओं को प्रभावी ढंग से सुलझा सके। साथ ही वे सामाजिक , सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक व अन्य सरोकारों से जुड़ कर देश में सकारात्मक परिवर्तन को संभव कर पाने में सक्षम हो सकें। रामशंकर चंचल की प्रौढ़ साहित्य में लिखी कृतियों में "पढ़ना लिखना सीखो , "साक्षर बनो महान बनो", "वृक्षारोपण," " बदल गया गांव", " पानी पानी," बड़ा आदमी", " आदिवासी तीज त्योहार " सोमारू" , " पर्यावरण की पुजारन" आदि प्रमुख हैं।

आंचलिकता:

डॉ.रामशंकर का जीवन जिस अंचल विशेष में बीता वहाँ के रीति रिवाज, आचार विचार, व्यवहार, पर्व त्योहार ,रूढ़ियों ,संस्कृति और सामाजिकता का सन्निवेश उनके प्रौढ़ साहित्य में होना स्वाभाविक है क्योंकि रचनाकार का संवेदनशील मन जिस यथार्थ को देखता और भोगता है उसकी दृष्टि उन परिस्थितियों के पीछे के सत्य को देख कर उसका चिंतन और मनन करती चलती है और उसमें निहित तथ्यों को तटस्थता के साथ उदघाटित करती चलती है। वहाँ के प्राकृतिक दृश्यों को अपने कथ्य में बयान करते हुए वे कहते हैं-"प्रकृति की रम्य व खूबसूरत जगह में बसा , पशुओं की चहल-पहल, पक्षियों के कलरव ,नदियों की कल-कल ,बाँसुरी की स्वर लहरियों से गूँजता भीलांचल झाबुआ का एक कस्बा रामगर ,जहाँ ऊँची-ऊँची हाथी देह-सी पहाड़ियों पर यत्र-तत्र झौपड़ियां बिखरी हैं। इन्हीं में निवास करते हैं अंचल के भोले-भाले, सहृदय जन। " कथा पात्रों के पहनावे से लेकर अन्य गतिविधियों में झाबुआ अंचल की झलक उनके लेखन में झलकती है। खासतौर से निरक्षर और ग्रामीण पात्र हर मौसम में पारंपरिक वेशभूषा में ही नजर आते हैं। उनका रंग रूप और कद-काठी, हाव-भाव , आदतें ,रीति-रिवाज ,ग्रामीण परिवेश, उनकी अल्हड़ता, भोलेपन ,सादगी आदि सबको लेखक ने अपने प्रौढ़ साहित्य में स्थान दिया है। 'बड़ा आदमी 'में उन्होंने इसी अनुभूति को समेटा है - "कैसा भी मौसम हो, तन पर दो हाथ कपड़ा सिर पर साफे के रूप में बंधा रहता। सर्दी ,गर्मी, बरसात कुछ भी हो यही तन पर और रहने को बांस की झौपड़ी। शरीर से प्रायः काले ,मट-मैले किंतु हृष्टपुष्ट। चेहरे पर मेहनत की रौनक। " लोक संस्कृति झाबुआ की माटी में रचे बसे आदिवासी जीवन के विविध रंगो वाली लोक संस्कृति की झलक भी लेखक के प्रौढ़ साहित्य में देखने को मिलती है कि किस वे तरह मिल-जुल कर अपने तीज-त्योहार मनाते हैं। उनका भगोरिया तो विश्व प्रसिद्ध है जो विदेशी पर्यटकों

को भी झाबुआ खींच लाता है। इसी भगोरिया की संस्कृति को उन्होंने "बड़ा आदमी " में भी दर्शाया है - "उसे याद आने लगा वह भगोरिया पर्व जब किशोर सोमला ने उसे पान खिलाया था, तब सविता ने सोमला की अंगुली काट ली थी और भाग गई थी। " झाबुआ के आदिवासी लोग मुख्य तौर पर कृषि और पशुपालन पर निर्भर है। खास अवसरों पर वे अपने पशुओं को चटख रंगों से सजाते हैं। 'गाय-गोयरी ' त्योहार के अवसर पर वे अपने जीवन की बाजी लगाने को भी तैयार हो जाते हैं। इस संस्कृति की जीवंत झलक उनके आलेख संग्रह ' आदिवासी पर्व-त्योहार ' में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है- "जिन व्यक्तियों के शरीर में 'सत ' आता है वे जमीन पर पेट के बल लेट जाते हैं। पटाखों की आवाज से गाय बिदकती है और इन आदिवासियों को कुचलती हुई निकल जाती है। " इनकी सबसे बड़ी कमजोरी है मदिरा, जिसका प्रयोग हर मौके पर करना आम है उनके जीवन में। उनकी इस प्रवृत्ति को भी लेखक ने प्रौढ़ साहित्य में जगह दी है - " वे दिन भर खेतों में श्रम करते और शाम को महुआ की शराब या ताड़ी में मस्त हो कुर्राटियां मारते। "कुर्राटी " यानि खुमारी और खुशी में मुँह से निकाली जाने वाली आवाज जो पूरे इलाके में उनकी उपस्थिति को दर्ज करा देती है। मद्यपान की इस कमजोरी की वजह से इनका जीवन हमेशा मुसीबतों से घिरा रहता है। जिससे इनके विकास में कई तरह की बाधाएं उत्पन्न हो जाती है। लोक नृत्य, लोक गीत और दारू के बिना इनका कोइ तीज त्योहार पूरा नहीं होता। जिसका बड़ा ही सजीव वर्णन लेखक के द्वारा किया गया है।

सामाजिकता

इस क्षेत्र के विशेष के आदिवासियों की सामाजिक परिवेश को भी लेखक ने बचपन से जिया है। उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, समस्याओं, रूढिवादी परम्पाराओं, अंधविश्वासों, मान्यताओं, शोषण और गरीबी के कारणों की पड़ताल करते हुए लेखक ने इन सबको अपने कथ्य में शामिल किया है। साथ ही समकालीन परिस्थिति में उपजे दबाव और बदलाव को भी उन्होंने अपनी रचनाओं में शामिल किया है आदिवासी लोगों में परंपराओं और रूढियों की जड़ें बहुत गहरे तक व्याप्त हैं। भले ही उनकी आर्थिक स्थिति उन्हें पैसा खर्च करने की इजाजत नहीं देती बावजूद इसके वे अपना सामाजिक धर्म निभाते हैं। अपनी पुस्तक तीज त्योहार में उन्होंने ऐसी ही कई बातों का जिक्र किया है -"स्वभाव से झाबुआ के भील भिलाले धर्म भीरू और वचन के पक्के होते हैं। प्रत्येक अवसर पर सामूहिक भोज, मद्यपान, कपड़ों ,गहनों का आदान-प्रदान इनकी परंपरा है।" आदिवासी समाज में शराबखोरी की समस्या बहुत आम है। ये लोग सार्वजनिक रूप से मदिरा का सेवन करते हैं। इनके लिए खुशी या गमी में ताड़ी या मदिरा पिलाना शान का प्रतीक माना जाता है। वे स्थानीय देवता को मानते हैं और उसे हमेशा प्रसन्न रखना चाहते हैं -"इसी खुशी में दोनों ने गांव में नीम के पेड़ के नीचे विराजमान देवता ' बाबा देव ' के आंगन में दीप जला , अगरबत्ती लगा नारियल बदार, गुड़ का भोग लगा स्कूल के सारे बच्चों को प्रसाद खिलाया।" राजनीति की बिसात पर भी उनके इसी भोलेपन का फायदा उठा इन्हें मोहरा बनाया जाता है और चंद रुपयों और शराब का लालच देकर इन्हें अपने पक्ष में करने का प्रयास राजनीतिज्ञों द्वारा किया जाता है। इस तरह के प्रयासों का खुलासा भी

लेखक अपने प्रौढ़ साहित्य में करता चलता है। कई बार भ्रष्ट राजनीति के चलते वे हत्या जैसे जघन्य अपराध को भी करने से पीछे नहीं हटते।

आर्थिक-सुधारवादी दृष्टि कोण: आदिवासी बहुल क्षेत्र होने से यह क्षेत्र अभी भी शिक्षा से कोसों दूर है और इसी वजह से यहाँ के आदिवासियों की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर है। इसी कारण आज भी ये लोग वक्त बेवक्त महाजन से उधार पैसा लेते हैं। यहां हर क्षेत्र में सुधार की बहुत जरुरत है। इसी दृष्टिकोण से रामशंकर चंचल ने अपनी रचनाओं के द्वारा प्रौढ़ नव साक्षरों में शिक्षा का अलख जगाने का प्रयास किया है। उनकी रचना ' बदल गया गांव " में शिक्षा के द्वारा उत्पन्न सकारात्मक बदलाव को दर्शाया गया है। जो व्यक्ति को आर्थिक आधार पर सक्षम बना समाज में उसे एक नई भाव भूमि प्रदान करता है। ऐसे ही अनेक प्रसंग उनके कथ्य का विषय बने हैं जिनके द्वारा वे बारबार इस सच्चाई को सबके सामने लाना चाहते हैं कि व्यक्ति और समाज का सुधार खुद व्यक्ति के हाथ में है। अनेक पात्रों के माध्यम से लेखक इस बात को अपने प्रौढ़ साहित्य में स्पष्ट करते हैं कि सरकार द्वारा गांव वालों की भलाई के लिए विभिन्न योजनाएं चलाई जा रहीं है लेकिन शिक्षा की कमी और पर्याप्त जानकारी के अभाव में ग्रामवासी इसका लाभ नहीं उठा पाते। अपनी कृति "पानी - पानी" में भी इसी बात को अभिव्यक्त करते हुए लेखक कहता है -"आज ग्रामीण रोजगार ग्यारंटी योजना के अंतर्गत शासन ने अनेक सुविधाएं दी हैं। जैसे निस्तार तालाब ,खेत तालाब, कपिल धारा, कूपनिर्माण आदि। ये वे योजनाएं हैं जो हमारी पानी की कमी को पूरा करेंगी । इनसे हमारा जीवन स्तर भी ऊँचा भी उठेगा। समाज में खुशहाली आएगी। " शिक्षा किस तरह समाज में सुधार लाती है इसका उदाहरण उन्होंने "बड़ा आदमी "में दिया है जब शिक्षा प्राप्ति के बाद एक पात्र बाल विवाह का विरोध करता हुआ कहता है -"माँ ये ब्याह अभी तू रहने दे, ब्याह की ये कोई उम्र है। तुझे मालूम है, मुझे अभी पढ़ना है बड़ा आदमी बनना है। माँ मैं सचमुच बड़ा आदमी बन गया तो सबसे पहले मैं ये कम उम्र में ब्याह की प्रथा पर रोक लगा कानून बनाऊंगा फिर ये दहेज बंद करवाऊंगा। " वे अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रौढ़ शिक्षार्थियों को उद्देश्यात्मक संदेश देकर उनकी सोच में बदलाव लाना चाहते हैं। वे बार-बार इस बात को पाठकों तक पहुँचाना चाहते है कि विकास का रथ शिक्षा के पहियों पर सवार होकर आगे बढ़ सकता है जिसके लिए स्वयं प्रयत्नशील होना होगा - "सच है, शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए गावों में सभी को प्रयास करना चाहिए। हर बार सरकार का मुँह नहीं देखना चाहिए। " शिक्षा के बल पर ही आत्मनिर्भरता, जीवनकौशल, आर्थिक संपन्नता और सम्मान अर्जित किया जा सकता है।

मानवीय संवेदना

रचनाकार ने झाबुआ अंचल के रहवासियों के मनोविज्ञान को भी देखा परखा और समझा है। वे मानवीय संवेदनाओं की गहराई को भली-भांति महसूस करते हैं और उन्हें कथ्य में पिरो देते हैं। मन को छूने वाली घटनाओं की प्रस्तुति पाठक को उनके दुख और पीड़ा का अहसास करा देती है। ऐसा ही करुण दृश्य उनकी रचना "पानी-पानी" में उपस्थित हुआ है जिसमें अपनी छोटी बहन की मत्यु का वर्णन पाठक के मन में दर्द का अहसास जगा देता है जिसमें वह टूटी फूटी हिन्दी और भीली भाषा में अपनी बात कहता है -

" पानी घणों गिरियो बाबूजी तो मांदी थइग्यी। तो इने दवा खाने लइग्यो पर रस्तामां मरी गई। गाड़ी वाला ने किधो पर डिंगला मांगे। मारा कने डिंगला नी था नई तो मैं मोटरमां बैठाइ ने लइ जातो ।" " पढ़ना लिखना सीखो " के एक अन्य दृश्य में खुशी के पलों का वर्णन भी लेखक द्वारा बड़ी शिद्दत से किया गया है - " पलंग से उठकर बैठना भी उसके लिए मुश्किल था। लेकिन उसने पलंग से उठकर मांगू को सीने से लगा लिया। वह रो पड़ी। उसकी आंखों में खुशी के आंसू थे। काँपते होठों से वह बड़बड़ा रही थी। काश तेरे पिता जिंदा होते तो कितने खुश होते। उनका बेटा मांगू आज डॉक्टर बन गया।"

महिला सशक्तिकरण:

डॉ.रामशंकर चंचल का प्रौढ़ साहित्य परिवर्तित होते जीवन परिवेश में स्त्री के चिंतन और स्थान को , नए सिरे से तलाश कर नई भाव भूमि देता दिखलाई पड़ता है। जो स्त्री बरसों से उपेक्षा ,अपमान और शोषण की शिकार रही है वह अपनी नई परिभाषा गढ़ती नजर आती है। वे समाज में नारी को उस स्थान पर देखना चाहते हैं जहाँ उसकी गरिमा को कोई ठेस न पहुँचे, उसका सम्मान हो। वह अपने आत्मविश्वास और मेहनत के बल पर आगे बढ़े। जिससे वह अपने आप को तो विकसित करे ही अपने परिवार में भी खुशहाली लाए। साथ ही समाज और देश का भी विकास करे। ऐसे कई प्रसंग उनकी रचनाओं में परिलक्षित होते हैं। उनकी रचना "पानी -पानी " का एक दृश्य इसी बात की घोषणा करता प्रतीत होता है। जिसमें उन्होंने स्त्री पात्र काली को एक ऐसी संघर्षशील महिला के रूप में प्रस्तुत किया है जो पति की हत्या के बाद विचलित नहीं होती बल्कि उसके सपनों को पूरा करने की खातिर राजनीति में कदम रखती है और शिक्षा और विवेक के बल पर मंत्री बन जाती है - "काली अब एक मंत्री नहीं जनता की मसीहा बन गई थी। विरोधी पार्टी के लोग भी काली को बहुत सम्मान देते थे। "लेखक प्रौढ़ साहित्य के द्वारा यह संदेश देना चाहता है कि अशिक्षा की वजह से ही स्त्रियों का शारीरिक और मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। उनके विकास में सबसे बड़ी बाधा उनकी कम उम्र में शादी है, जिसकी वजह से वे कम उम्र में ही माँ बन जाती हैं और कुपोषण का शिकार होकर जीवन भर बीमारियों का बोझ ढोते हुए अंत में काल कवलित हो जाती हैं। वे उनमें जागरुकता लाना चाहते हैं कि उन्हें अब अपने खिलाफ हो रहे किसी भी शोषण को सहन नहीं करना है और अपनी व अपने परिवार की भलाई के लिए साक्षरता को अपनाना है ।

निष्कर्ष

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि डॉ.रामशंकर चंचल का प्रौढ़ साहित्य न केवल झाबुआ के आदिवासी क्षेत्र के निरक्षर प्रौढ़ों बल्कि अन्य क्षेत्र के प्रौढ़ों के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। जिसके माध्यम से उनमें वह चेतना और जागरुकता पैदा की जा सकती है जो उन्हें मुख्य धारा से जोड़ने में मददगार हो। साथ ही जिसके माध्यम से वे अपनी बदहाली के कारणों की पड़ताल कर , अपने जीवन स्तर को सुधार सकें। झाबुआ की आंचलिक भाव भूमि और ग्रामीण परिवेश में रची बसी प्रौढ़ साहित्य की कथाएं वहाँ के सामाजिक परिवेश का तानाबाना भी बड़ी कुशलता से बुनती प्रतीत होती हैं। जिनमें उनकी गरीबी, पारिवारिक स्थिति, समस्याओं, मान्यताओं, रूढ़ियों के दर्शन होते हैं। इसके अलावा झाबुआ की रंग बिरंगी लोक संस्कृति की झलक भी उनके

प्रौढ़ साहित्य में दृष्टिगत होती है। जिससे कथ्य में चित्रात्मकता और सजीवता का आभास होता है। प्रौढ़ साहित्य की अपनी कृतियों में लेखक को भोले भाले आदिवासियों की मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करने में भी सफलता मिली है। उनके आर्थिक पक्ष ,सुधारवादी दृष्टिकोण, स्त्री के संघर्ष और उससे उबरने का सूत्र भी उनके कथ्य में शिक्षा के बीजमंत्र के साथ मौजूद है जिसके द्वारा वे समूचे परिदृश्य में बदलाव की कामना करते दीख पड़ते है। इन सबका वर्णन उनके द्वारा जिसका सहज और सरल भाषा में बड़ी संप्रेषणीयता और रोचकता के साथ किया गया है।

सुझाव : उनके कथ्य में कहीं कहीं वाक्य कुछ लंबे हो गए हैं जबकि छोटे वाक्य प्रौढ़ साहित्य की अनिवार्यता माने जाते हैं। कई जगह घटनाओं, विवरणों और पात्रों में अनावश्यक दोहराव भी है। जिन्हें दूर करके इन रचनाओं की सोद्देश्यता को बनाए रखा जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 भारत में प्रौढ शिक्षा - जे.सी. अग्रवाल ,विद्याविहार , संस्मरण 2011

2 भारत में सतत शिक्षा - नसीम अहमद ,ग्रंथ अकादमी , संस्करण 2009

3 पढ़ना लिखना सीखो - डॉ.रामशंकर चंचल ,जन चेतना प्रकाशन, इलाहाबाद 2001

4 साक्षर बनो महान बनो - डॉ.रामशंकर चंचल आशु प्रकाशन इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण 2005

5 वृक्षारोपण - डॉ.रामशंकर चंचल , अनुभूति प्रकाशन, इलाहाबाद प्रथम संस्करण 2004

6 बड़ा आदमी - डॉ.रामशंकर चंचल,जनचेतना प्रकाशन ,इलाहाबाद प्रथम संस्करण 2004

7 आदिवासी तीज त्योहार - डॉ.रामशंकर चंचल.,अचिंत्य पब्लिकेश इलाहाबाद,प्रथम संस्करण 2006

8 पानी पानी, डॉ.रामशंकर चंचल, जनचेतना प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2013